अनुक्रमणिका

भूमिका

अध्याय-1. प्रेम की अवधारणा और स्वरूप **1-10**

1.1 प्रेम का व्युत्पत्तिपरक अर्थ
1.2 प्रेम की परिभाषा एवं स्वरूप
1.3 प्रेम की विशेषताएँ
1.4 प्रेम के विविध रूप
1.5 प्रेम का महत्व और प्रासंगिकता

अध्याय-2. घनानंद का समय और हिंदी की रीतिकालीन काव्यधारा **11-23**

2.1 रीतिकालीन काव्यधारा का संक्षिप्त विवेचन
2.2 घनानंद का जीवनवृत्त और योगदान

अध्याय-3. वली दकनी का समय और हिंदी-उर्दू की दक्खिनी काव्यधारा **24-45**

3.1 दक्खिनी काव्यधारा का संक्षिप्त विवेचन
3.2 वली का जीवनवृत्त और योगदान

अध्याय-4. घनानंद के काव्य में प्रेम का स्वरूप **46-56**

अध्याय-5. वली दकनी के काव्य मे प्रेम का स्वरूप **57-66**

उपसंहार **67-68**

संदर्भ ग्रंथ-सूची **69-72**